एस.एस. कॉलेज जहानाबाद।
विभाग हिन्दी
विषय - हिन्दी रचना-पत्र
वर्ग - स्नातक भाग -1.
शिक्षण माध्यम - वाट्स-एप
समय 11 बजे से 12 बजे तक, 12.10.2020
शिक्षक - डॉ. शोभा शर्मा
पाठ - कहानी 'पूस की रात' (प्रेमचंद)

प्रिय छात्र-छात्राओं!

हिन्दी रचना पत्र में विकल्प के तौर पर एक पुस्तक 'साहित्य धारा' भी पढ़ना है। परीक्षा में प्रश्न 'कविता कानन' एवं 'साहित्य धारा' दोनों से पूछे जाते हैं। 'कविता कानन' में केवल कविताएँ हैं विभिन्न कवियों की। 'साहित्य धारा' में पद्य भाग और गद्य भाग दोनों हैं। प्रश्न दोनों से पूछे जाते हैं। यह परीक्षार्थियों पर निर्भर करता है कि किस पाठ्य पुस्तक से उत्तर देना पसंद करते हैं। कविता से सम्बन्धित प्रश्नोत्तर आपको कई E.Content से वाट्स-एप के द्वारा भेजे गये हैं। संभवत: गद्य-भाग से प्रश्नोत्तर नहीं भेजे गये हैं, इसलिए मैं आज 'साहित्य धारा' के अन्तर्गत गद्य भाग से मुंशी प्रेमचन्द की कहानी 'पूस की रात' पर चर्चा करना चाहता हूँ। 'साहित्य धारा' के गद्य-भाग का पहला पाठ यह 'पूस की रात' कहानी है।

प्रेमचन्द हिन्दी-कथा-साहित्य के ऐसे कहानीकार हैं जिनकी लेखनी से लगभग साढ़े-चार सौ कहानियाँ लिखी गई हैं। उपन्यास के क्षेत्र में भी इनका योगदान मील का पत्थर साबित हुआ है। सबसे बड़ी बात है कि इनका कथा-साहित्य ग्रामीण जीवन को गहरी संवेदनशीलता प्रदान करने में सफल हुआ है। यह भी तब जब भारत गुलाम था। जमींदारी प्रथा थी। किसान-मजदूर पीसे जा रहे थे।

आपके लिए विशेष विस्तार में जाने की आवश्यकता नहीं है सीधे 'पूस की रात' कहानी पर बात करनी चाहिए। इसी में अन्य सारी बातें खुलती जायेंगी।

'पूस की रात' कथा सम्राट प्रेमचन्द की यथार्थवादी कहानी है। यह कहानी वर्ष 30 में लिखी गई थी। अब सवाल यह खड़ा होता है कि यथार्थवादी कहानी से तात्पर्य क्या है। इसके लिए कहानी संरचना की दृष्टि प्रेमचन्द की सभी कहानियों को तीन भागों में अलग करके देखना आवश्यक है क्योंकि इससे प्रेमचन्द की कहानियों का विकास क्रम भी स्पष्ट होता चला जायेगा। ये हैं — (1) आदर्शवादी कहानियाँ (2) आदर्शोन्मुख-यथार्थवादी कहानियाँ (3) यथार्थवादी कहानियाँ।

प्रारम्भ में प्रेमचन्द आदर्शवादी कहानियाँ लिखते थे- जैसे- 'दो बैलों की कथा', 'पंच परमेश्वर'। इस तरह की कहानियाँ जीवन के यथार्थ से जुड़ी होती थीं पर कहानी के अंत में कहानीकार की इच्छानुसार आदर्श की स्थापना हो जाती थी। जैसे 'पंच-परमेश्वर' कहानी में अन्ततोगत्वा यह सिद्ध कर दिया जाता है कि पंच (न्यायकर्ता) परमेश्वर के समान होता है, वह न किसी का दोस्त होता है न किसी का दुश्मन। कहानी की समस्या का समाधान इस तरह की कहानियों में उपलब्ध करा दिया जाता है। जबकि कहानी के प्रारम्भ से लेकर मध्य तक जीवन के सारे छल-छद्म देखने को मिलता है।

शेष अगली कक्षा में।

रमेश शर्मा
12.10.20.